तात्पर्य

युद्ध का उपक्रम होने ही वाला है। पूर्वोक्त वाक्य से स्पष्ट है कि जिन पाण्डवों को युद्ध में भगवान् श्रीकृष्ण से साक्षात् मार्गदर्शन प्राप्त है, उनकी कल्पनातीत सैन्य-व्यवस्था को देखकर धृतराष्ट्रपुत्र प्रायः हतोत्साहित हो चुके हैं। अर्जुन की ध्वजा पर श्रीहनुमान् जी का चिन्ह भी विजय का मंगलमय प्रतीक है, क्योंकि हनुमान् जी ने राम-रावण युद्ध में भगवान् राम की सहायता की थी, जिससे श्रीराम की उल्लासमयी त्रिभुवन-विदित विजय हुई। इस समय राम एवं हनुमान् दोनों ही अर्जुन के रथ पर उसकी सहायता के लिए विराजमान हैं। भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं राम हैं और जहाँ भी भगवान् राम विराजमान रहते हैं, वहाँ उनके नित्य दास हनुमान् जी और नित्य अर्धांगिनी लक्ष्मीदेवी सीता जी भी अवश्य निवास करती हैं। अतः अर्जुन के लिए शत्रुभय का कोई कारण नहीं है। इससे भी अधिक, इन्द्रियों के स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन का मार्गदर्शन करने को स्वयं उपस्थित हैं, जिससे अर्जुन को युद्ध सम्बन्धी सम्पूर्ण सद्परामर्श अनायास उपलब्ध रहेगा। अपने नित्य भक्त के लिए श्रीभगवान् द्वारा नियोजित ऐसी मंगलमयी स्थिति में निश्चित विजय के लक्षण सन्निहित रहते हैं।

अर्जुन उवाच।
सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।।२१।।
यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे।।२२।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **सेनायोः**=सेनाओं के, **उभयोः**=दोनों; **मध्ये**=मध्य में; **रथम्**=रथ को; **स्थापय**=खड़ा करिए; **मे**=मेरे; **अच्युत**=हे अच्युत; **यावत्**=जब तक; **एतान्**=इन सब; **निरीक्षे**=देख लूँ; **अहम्**=मैं; **योद्धुकामान्**=युद्ध की इच्छा वालों को; **अवस्थितान्**=युद्धभूमि में एकत्र हुए; **कैः**=किनके; **मया**=मुझे; **सह**=साथ; **योद्धव्यम्**=युद्ध करना है; **अस्मिन्**=इस; **रण**=युद्ध-रूप; **समुद्यमे**=संघर्ष में।

अनुवाद

अर्जुन ने कहा, हे अच्युत! मेरे रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में स्थापित कर दीजिए, जिससे यहाँ उपस्थित इन सब युद्ध के अभिलाषी योद्धाओं को मैं देख सकूँ, जिनके साथ इस महासंग्राम में मुझे संघर्ष करना है।।२१-२२।।

तात्पर्य

साक्षात् स्वयं भगवान् होते हुए भी श्रीकृष्ण स्वरूपभूता अहैतुकी करुणा से अभिभूत होकर अपने सखा की सेवा में संलग्न हैं। भक्तों के लिए उनके स्नेह में कभी न्यूनता नहीं आती। इसी से अर्जुन ने यहाँ उन्हें **अच्युत** नाम से सम्बोधित किया है। सारथी के रूप में उन्हें अर्जुन का आज्ञापालन करना था। परन्तु इस प्रसंग